

विषयानुक्रमणिका

आमुखम्	iii-iv
भूमिका	v-viii
आभार	ix-x

१. प्रथमोऽध्यायः- अभिनव शारीर संहिता के प्रयोजन एवं 1-12 शारीरोपक्रमम्

i) प्रयोजन	1
ii) जीवनोत्पत्ति-साम्प्रतिक अवधारणा	2
iii) अद्यतन शरीराङ्ग विभाजन की अवधारणा	3
iv) देह परमाणु	11

२. द्वितीयोऽध्यायः- अभिनिवृत्ति शारीरम् 13-49

i) धातुज पुरुष एवं एकधातुज पुरुष	15
ii) द्विधातुज पुरुष एवं त्रिधातुज पुरुष	16
iii) षड्धातुज पुरुष	17
iv) षड्भाव समुदाय	18
v) सप्तदश धातुज पुरुष	19
vi) चतुर्दश धातुज पुरुष	19
vii) कर्म पुरुष	20
viii) धातुओं के सम्बन्ध में आयुर्वेदिक अवधारणा	21
ix) सप्त धातुओं के कार्य	22
x) परमाणु/धातुओं के सम्बन्ध में साम्प्रत अवधारणा	44
xi) कोषिकामयः अन्तः संरक्षण धातु	45

xii)	संयोजक धातु	45
xiii)	मांस धातु एवं तंत्रिका धातु	46
xiv)	रचना शारीर में सामान्य परिभाषिक शब्दावली	46

३. तृतीयोऽध्यायः- पंच महाभूत शारीरम् 50-63

i)	भूत शब्द की परिभाषा	50
ii)	पंचमहाभूत	50
iii)	अग्नि के कर्म	51
iv)	आहार-साम्य-आहार का पंचभौतिकत्व	51
v)	हिताहार का महत्व	53
vi)	दोषोत्पादक महाभूत	53
vii)	रक्त की पंचभूतात्मकता	54
viii)	विभिन्न धातुओं में पंच महाभूत का योगदान	54
ix)	इन्द्रियों में पंचमहाभूत-प्राधान्य	55
x)	धातुपोषण में महाभूतों का योगदान	55
xi)	कायाग्नि का स्वरूप	56
xii)	भूताग्नि का कर्मस्थल	57
xiii)	गर्भ वर्णोत्पत्ति में पंचमहाभूतों का योगदान	61
xiv)	मन की पांच भौतिकता	62

४. चतुर्थोऽध्यायः- गर्भशारीर 64-111

i)	गर्भशारीर का महत्व	64
ii)	गर्भधारण	65
iii)	वायु और कर्म स्वभाव की गर्भ स्थापना में भूमिका	66

iv)	कर्म स्वभाव	67
v)	मनुष्य बीज संरचना	68
vi)	गर्भ शारीर में आनुवंशिकता सिद्धान्त की भूमिका	69
vii)	अत्मज भाव	70
viii)	सात्म्य भाव	72
ix)	सत्त्वज भाव	73
x)	मातृज भाव	75
xi)	पितृज भाव	75
xii)	रसज भाव	76
xiii)	बीज, बीजभाग एवं बीजभागावयव	77
xiv)	गर्भवृद्धि घटक	78
xv)	जीव द्रव निर्माण	80
xvi)	जलाहरण	80
xvii)	अन्तः कोषों का प्रामाणिक साक्ष्य	82
xviii)	शुक्र शोणित प्रकृति	82
xix)	पोषणात्मक घटक	84
xx)	अन्तःस्राव	85
xxi)	जीवनीय तत्व	85
xxii)	आदर्श शुक्र-शोणित के विशिष्ट लक्षण	86
xxiii)	विकृत शुक्राणु स्वरूप	93
xxiv)	स्वस्थ आर्तव (रक्त) के विशिष्ट लक्षण	94
xxv)	गर्भावक्रान्ति	100
xxvi)	गर्भ-लिंगोत्पत्ति	102
xxvii)	गर्भ-विकास के समूह	103
xxviii)	मासानुमासिक गर्भ विकास क्रम	106
xxix)	यमल गर्भ	110

५. पंचमोऽध्यायः-	अस्थि शारीर	112-188
i)	अस्थि धातु के कर्म	114
ii)	अस्थियों का आकार	116
iii)	अस्थि के प्रकार	116
iv)	अस्थियों की रचनात्मक विशेषताएँ	118
v)	देहास्थि संख्या	121
vi)	अस्थि गणना विभाग	122
vii)	साम्प्रतिक नव्य विद्वद्धारणा	122
viii)	अस्थि विकास	126
ix)	शीर्ष आधार रन्ध्र	127
x)	अन्तराधि अस्थि	141
xi)	कशेरुक दण्ड-सामान्य विशेषताएँ	150
xii)	ऊर्ध्व एवम् अधः शाखास्थि	157

६. षष्ठोऽध्यायः-	सन्धि-स्नायु एवं कला शारीरम्	189-211
i)	अस्थि संधि (परिभाषा)	189
ii)	सीवनी	194
iii)	चेष्टामय संधियों के प्रकार	195
iv)	ग्रीवा की महत्वपूर्ण संधियाँ	201
v)	शीर्ष कशेरुकीय सन्धि	203
vi)	पर्शुका कशेरुकीय सन्धि	204
vii)	ऊर्ध्वशाखा की मुख्य सन्धि	204
viii)	अधः शाखा की मुख्य सन्धि	206
ix)	स्नायु शारीर	208
x)	कला शारीर	211

७. सप्तमोऽध्यायः-	पेशी शारीरम्	212-214
i)	परिभाषा	212

ii)	प्रकर	212
iii)	तंत्रिका भरण	213
८.	अष्टमोऽध्यायः स्रोतस शारीरम्	215-228
i)	स्रोतस शारीर	215
ii)	सिरा के कर्म	222
iii)	स्रोतस स्वरूप	222
iv)	स्रोतोदुष्टि के सामान्य लक्षण	222
v)	स्रोत का साधारण अर्थ	227
vi)	महास्रोतस	228
९.	नवमोऽध्यायः निःस्रोतस शारीरम्	229-263
i)	अवटुका स्राव के अधिक्य के परिणाम	234
ii)	परावटुका ग्रन्थि	235
iii)	अपरा ग्रन्थि	239
iv)	पीयूषका ग्रन्थि	239
v)	अग्रखण्ड के स्राव और कर्म	240
vi)	बीजग्रन्थि प्रवर्तक स्राव	241
vii)	अधः आज्ञाकन्द ग्रन्थि	241
viii)	पिनियल काय	247
ix)	परावटुका ग्रन्थि	249
x)	फलम्	257
xi)	बीजग्रन्थि रचना	258
१०.	दशमोऽध्यायः धमनी, सिरा एवं लसीका शारीर	264-282
i)	परिभाषा	264
ii)	प्रमुख धमनियाँ	264

iii)	अधःशाखा की धमनियाँ	265
iv)	ऊर्ध्वशाखा की धमनियाँ	267
v)	वक्षोभाग की धमनी	269
vi)	सिरा शरीर	270
vii)	दोषों के आधार पर सिरा प्रकार	271
viii)	सिरा वेध्यावेध्यता	272
ix)	ऊदरविभागीय सिरा	276
x)	शिश्नपृष्ठ सिराएँ	276
xi)	ऊर्ध्वशाखायाः सिराः	277
xii)	लसीका शरीर	279
xiii)	अधशाखा लसीका वाहिन्यः	279
xiv)	अध शाखायाधातूनामुत्तानलसीकातन्त्रम्	280
xv)	ऊर्ध्वशाखायाः लसीका तन्त्रम्	281
xvi)	ऊदरविभागस्य लसीका तन्त्रम्	282

११. एकादशोऽध्यायः कोष्ठ, कोष्ठांग एवम् आशय 283-363

i)	परिभाषा	283
ii)	कोष्ठाङ्ग	285
iii)	आशय	285
iv)	श्वसन संस्थान	287
v)	हृदय	296
vi)	मन हृदय एवं इन्द्रियों का सम्बन्ध	303
vii)	ऊदरगुहा के कोष्ठांग	316
viii)	आमाशय	317
ix)	लघु आन्त्र	323
x)	मध्यान्त्र एवं शेषान्त्र	324
xi)	आन्त्रयोजनी	325

xii)	पक्वाशय	327
xiii)	अन्नपुच्छ	328
xiv)	मलाशय	330
xv)	अग्न्याशय	333
xvi)	यकृत	337
xvii)	क्लोम	341
xviii)	प्लीहा/जीवरक्ताशय	343
xix)	वृक्क	345
xx)	गवीनी	351
xxi)	मूत्राशय	353
xxii)	पुरुष जननाङ्ग	355
xxiii)	शेफस्	360
xxiv)	अष्टीला/पौरुष ग्रन्थि	361
१२. द्वादशोऽध्यायः	मर्म शारीर	364-367
i)	परिभाषा	364
ii)	सद्यः प्राणाहर मर्म	365
iii)	कालान्तर प्राणाहर मर्म	365
iv)	विशल्यघ्न मर्म	366
v)	वैकल्यकर मर्म	366
vi)	रुजाकर मर्म	366
vii)	मर्मणां महत्त्वम्	367
१३. त्रयोदशोऽध्यायः	इन्द्रिय शारीर	368-403
i)	परिभाषा	368
ii)	एकेन्द्रियवाद	370
iii)	पंचेन्द्रियवाद	371

iv)	षडन्द्रियवाद	371
v)	दशेन्द्रियवाद	371
vi)	एकादशेन्द्रियवाद	372
vii)	पंचपंचक	372
viii)	चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठान	378
ix)	नेत्र गोलक रचना	379
x)	नेत्र विषयक आयुवेदीय अवधारणा	381
xi)	नेत्र शारीर, सुश्रुतावधारणा	382
xii)	कर्णेन्द्रियाधिष्ठान	385
xiii)	रसनेन्द्रियाधिष्ठान	391
xiv)	घ्राणेन्द्रियाधिष्ठान	395
xv)	अधःशाखा तन्त्रिका	402

१४. चतुर्दशोऽध्यायः तन्त्रिका शारीर 404-436

i)	परिभाषा	404
ii)	स्वतन्त्र-तन्त्रिका संस्थान	417
iii)	सुषुम्ना	418
iv)	सुषुम्ना-पारिखा	420
v)	सुषुम्ना की आन्तरिक रचना	421
vi)	बृहन्मस्तिष्क	423
vii)	शीर्ष्णोय तन्त्रिका	425
viii)	धम्मिलक	432
ix)	मध्य मस्तिष्क	433
x)	उष्णीषक	434
xi)	सुषुम्ना शीर्ष	435

१५. पंचदशोऽध्यायः त्वक्, रोम, नख,	437-446
स्वेद-ग्रन्थि, स्तन्य ग्रन्थि एवं मल शारीर	
i) त्वक्	437
ii) गर्भ त्वक् वर्णोत्पत्ति	438
iii) केश एवं रोम	439
iv) त्वक् विकृति	439
v) त्वक् ग्रन्थियाँ	441
vi) स्वेद ग्रन्थि	442
vii) स्तन्याशय-स्तन्य ग्रन्थि	442
viii) मल	444
ix) पुरीष की व्युत्पत्ति	445
Index	447-460